Topic –

Important factors of Job Satisfaction

(कार्य संतुष्टि के कुछ महत्वपूर्ण कारक)

Dr. Kumari Sudhara Prasad
Associate Prof.
Dept. of Psychology

इसलिए कार्य में संतोष बनाये रखने के लिए यह आवश्यक है कि कर्मचारियों को उतना ही कार्य भार सौंपा जाये जितना वे सुगमता पूर्वक कर सकें।

(5) समान कार्य के लिए समान वेतन — किसी भी औद्योगिक संस्थान अथवा कार्यालय में कम-से-कम उतना वेतन तो अवश्य कर्मचारियों को दिया जाना चाहिए जितना कि उसी प्रकार का कार्य करने वाले कर्मचारियों को अन्य कार्यालयों अथवा संस्थानों में मिलता है। हो सकता है कि इनका वेतन आवश्यकता अनुसार अपर्याप्त हो, फिर भी, समान वेतन होने से उनमें संतोष बना रहता है, लेकिन अगर इस संबंध में समानता नहीं है तो जहाँ पर वेतन कम होता है वहाँ पर कर्मचारियों में सदैव असंतोष बना रहता है। आजकल सभी श्रमिक संघों एवं कर्मचारी यूनियनों का यह नारा सा बन गया है कि समान कार्य के लिए समान वेतन दिया जाये।

(6) कार्य की समस्याओं में सहायता लेने की स्वतंत्रता — कुछ ऐसी समस्याएँ अनेक बार कार्य के दौरान में आ जाती हैं जिनको स्वयं कर्मचारी नहीं सुलझा पाता है। ऐसी दशा में कर्मचारियों को यह स्वतंत्रता होनी चाहिए कि वह किसी योग्य व्यक्ति अथवा अधिकारियों को यह स्वतंत्रता होनी चाहिए कि वह किसी योग्य व्यक्ति अथवा अधिकारियों की सहायता से अपनी समस्याओं को सुलझा सके।

(7) अनुचित डाँट-फटकार से मुक्ति — बहुधा ऐसा देखा जाता है कि कुछ अधिकारी अपने मजदूरों ~~कर्मचारियों~~ को सदैव डाँट-फटकार लगाते हैं, जिनके कारण उनमें असंतोष की भावना बनी रहती है और काम करने में भी वे रुचि नहीं प्रदर्शित करते। अतः कर्मचारियों में कार्य संतोष बनाये रखने के लिए यह नितान्त जरूरी है कि उन्हें डाँट-फटकार से मुक्त रखा जाय।

(8) दैनिक कार्य के घण्टों का संतोषजनक होना — कार्य के घण्टों की संख्या एवं कार्यों के प्रारंभ होने और समाप्त होने का समय कारखानों एवं कार्यालयों में ऐसा

होना चाहिए ताकि अधिक से अधिक कर्मचारियों को सुविधा हो। जहाँ पर दैनिक कार्य का दृश्य संतोषजनक नहीं होता है वहाँ पर कर्मचारियों में असंतोष बढ़ता है।

(9) अवकाश की सुविधा — किसी-किसी कार्यालय अथवा कारखाने में बड़ी कठिनाई से अवकाश मिलता है। ऐसा होने से कर्मचारियों में सदैव असंतोष बना रहता है। अतः सेवायोजकों को चाहिए कि वे त्योहारों एवं सार्वजनिक उत्सवों के अवसरों पर कर्मचारियों को उचित मात्रा में अवकाश प्रदान करें।

आधुनिक युग में कारखानों में भी सप्ताह में एक दिन के अवकाश के अतिरिक्त 15 दिन में एक दिन का पूरा अवकाश दिया जा रहा है। इसके अतिरिक्त विभिन्न त्योहारों पर भी अवकाश दिया जा रहा है। आकस्मिक अवकाश एवं चिकित्सा के लिए भी अवकाश दिया जाता है। गर्भावस्था में महिला कर्मचारियों को तीन माह का अवकाश दिया जाता है। जिसके परिणाम स्वरूप कर्मचारियों में संतोष बना रहा है।

(10) शिकायतों का सुनना एवं दूर किया जाना — बहुधा श्रमिकों की शिकायतों पर सेवायोजक ध्यान नहीं देता है, जिस के फलस्वरूप श्रमिकों में असंतोष बना रहता है। कार्य में संतोष बनाये रखने के लिए श्रमिकों की शिकायतों को ध्यान से सुना जाना चाहिए एवं उनको दूर करने के उपाय किये जाने चाहिए।

(11) संतोषजनक भविष्य — सभी कर्मचारी को अपने भविष्य की चिन्ता बनी रहती है। अगर कर्मचारी को यह ज्ञात रहता है कि कितना भी परिश्रम करने पर भी उनका भविष्य अनिश्चित है तो उनमें असंतोष बना रहता है। अतः कर्मचारियों में संतोष उत्पन्न करने के लिए कार्यालयों एवं कारखानों में उन्नति करने के नियम स्पष्ट एवं निश्चित होने चाहिए। अच्छा काम दिखलाने पर कर्मचारी की वेतन एवं पद में वृद्धि होनी चाहिए। ऐसा होने पर कर्मचारियों को उनके भविष्य के सम्बन्ध में संतोष बना रहता है तथा वे रुचि लेकर कार्य करते हैं।

(12) कर्मचारियों की योग्यताओं एवं प्रगति की जाँच — प्रत्येक कर्मचारी यह चाहता है कि उसकी योग्यताओं के अनुरूप कार्यालयों में उसका पद एवं वेतन में वृद्धि हो। कोई नया प्रशिक्षण अगर कर्मचारी ने प्राप्त किया है तो उनकी योग्यताओं में वृद्धि से उसकी प्रगति होनी चाहिए।

कर्मचारियों की योग्यताओं का जिन संस्थाओं में अधिक ध्यान रखते हैं एवं वेतन वृद्धि के साथ-साथ उन्हें अधिक उन्नति करने के अवसर प्रदान करते हैं उनमें कर्मचारियों में संतोष बना रहता है। इसके विपरीत जहाँ पर ऐसा नहीं होता है वहाँ पर कर्मचारियों में असंतोष बना रहता है तथा अपनी योग्यता को बढ़ाने की ओर वे कोई ध्यान नहीं देते। क्योंकि उन्हें मालूम रहता है कि योग्यताओं की वृद्धि एवं प्रगति करने से कोई लाभ नहीं

(13) रचनात्मक सुझावों का सम्मान — अगर कर्मचारियों को सुझाव देने के लिए प्रोत्साहित किया जाये तो वे अत्यन्त महत्वपूर्ण सुझाव दे सकते हैं। क्योंकि भिन्न-भिन्न स्थितियों में कार्य करने वाले कर्मचारी ही वास्तव में यह बतला सकते हैं कि कौन-कौन से सुधार कार्य करने की परिस्थितियों में किये जा सकते हैं।

अगर वास्तव में कार्यालयों, कारखानों एवं अन्य संस्थाओं में कार्य संतोष बनाये रखना है तो कर्मचारियों के सुझावों पर ध्यान दिया जाये एवं उनकी प्रशंसा की जाये। रचनात्मक सुझावों की अवहेलना होने पर कर्मचारी असंतुष्ट रहते हैं क्योंकि उन्हें यह अनुभव होता है कि उनकी परिस्थितियों में कोई भी सुधार नहीं

(14) कार्य की मैत्रीपूर्ण समीक्षा — ऐसा देखा जाता है कि कर्मचारियों की थोड़ी भी गलती पर अधिकारी उन्हें झिड़की करते हैं अथवा कटु आलोचना करते हैं। ऐसी दशा में कर्मचारियों में असंतोष बना रहता है। अगर मैत्रीपूर्ण ढंग से एवं सहायक के रूप में कर्मचारियों को अधिकारी वर्ग उनकी गलतियाँ बतलायें अथवा आलोचना करें तो कर्मचारियों पर अच्छा प्रभाव पड़ता है एवं काम भी सुगमता पूर्वक बन जाता है।

संक्षेप में कार्य-संतुष्टि (job satisfaction) के लिए कुछ विशेष परिस्थितियाँ बनानी पड़ती हैं और भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न कारक या तत्व (factors) महत्वपूर्ण हो सकता है।

आधुनिक तत्व विश्लेषण तकनिक (Factor Analysis Technique) द्वारा कार्य संतुष्टि के कारकों के महत्व अध्ययन हुए।